आधुनिक भारतीय कला में दलित और गैर–दलित कलाकार की महत्त्वपूर्ण भूमिका

जया दारोंडे
असिसेंट प्रोफेसरललित कला विभागकुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

आधुनिक कला का आरम्भ उस समय से माना जाता है जब कलाकार अपनी कलागत अभिव्यंजना में पूर्ण स्वतंत्र होने की घोषणा करता है।

कला के क्षेत्र में कलाकार को सृजन की स्वतंत्रता तभी दी जा सकती है जब समाज उसे आवश्यक समझता हो और यह स्वतंत्रता भी हर किसी को नहीं दी जा सकती । सृजन की स्वतंत्रता पाने का वही कलाकार हकदार है जो समाज की आवश्यकताओं को अच्छी तरह समझता है। समाज की आवश्यकता कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है कलाकार के सृजन की स्वतंत्रता से। समाज को जिस प्रकार की कला की आवश्यकता होती है। कलाकार के लिये आवश्यक है कि वह वैसी ही कला का निर्माण करे।

आज का जमाना 2000 वर्ष पूर्व के जमाने से बिल्कुल भिन्न है। आज यदि हम अजन्ता की परम्परा में ही चित्र बनाये तो वह हमारे जमाने का प्रतिनिधित्व नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आज के मनुष्य की मानसिकता या सामाजिक स्थिति भी उस तरह की नहीं है कि हम उसी परम्परा के बिल्कुल अनुरूप कला प्रस्तुत कर सके।

आज का कलाकार जिस तरह की जिन्दगी अपने चारों ओर पा रहा है उसी से प्रेरित होकर के चित्र रचना करता है। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी मानी जाती है। कलाकार भी नये सृजन का आविष्कार कर सकता है। कलाकार को ऐसे आविष्कार (सृजन) करने की स्वतंत्रता दी जा सकती है जिसकी समाज को आवश्यकता है। समाज की नयी आवश्यकता ही नयी कला को जन्म देती है।

ललित कला के स्तर पर कला मानवीय भावों के आदान–प्रदान की एक सशक्त भाषा, माध्यम है। कला मानव की उच्चतम अनुभूतियों की परिचायक है और समाज के भावात्मक उन्नयन का महत्त्वपूर्ण माध्यम तथा साधन है। निश्चित रूप से कला एक सामाजिक कृत्य है और कला के इन्हीं गुणों तथा महत्त्व को ध्यान में रख कर प्रत्येक समाज कलाकारों को सृजन की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

इसी स्वतंत्रता एवं सामाजिक जिम्मेदारी को समझकर कलाकारों ने समाज का ऐसा विषय चयनित किया जो समाज में ही 'अस्पृश्य' कहलाया । यह अस्पृश्य समाज ही 'दलित' नाम से जाना जाता है। उसी विषय पर आधारित कला को ही दलित कला कहा जाता है। दलित कला अर्थात् दलित कलाकारों द्वारा दलित चेतना से दलितों ने दलितों के विषय में की गई कला है। दलित कला का स्वरूप उसके अंतर्गत होने वाले दलित्व में है और उसका प्रयोजन स्पष्ट है। उसका लक्ष्य है कि दलित समाज को गुलामी से अवगत कराना और स्वर्ण समाज के समक्ष अपनी व्यथा और वेदनाओं को बयान करना । दलितों का दुःख, परेशानी, गुलामी, अधःपतन और उपहास के साथ ही दरिद्रता का कलात्मक शैली से चित्रण करने वाली कला ही दलित कला है।

दलित कला का आधार यहाँ की जाति व्यवस्था है और इस जाति व्यवस्था में पैदा होकर मरने तक गुलामी सहन करने की घुटन दलित कला की प्रेरक शक्ति है। इसलिए दलित कला का सृजन दलित कलाकार ही कर सकता है। ऐसा माना जाता है परंतु आधुनिक काल में प्रमुखता से गैर दलित कलाकारों ने भी इस दलित विषय पर काम करना शुरू किया था। शिल्पकला, चित्रकला, साहित्य में ही नहीं तो विविध माध्यम में 'दलित कला' विषय चिन्तन एवं कला का माध्यम बन गया परंतु सत्य यह भी है कि दलितों का जातीय विशेष अनुभव, कल्पना के बल पर व्यक्त करना संभव नहीं है। कल्पना के बल पर दलित कला की जा सकती है पर भावनाओं का अभाव हो सकता है और कला में भावना अधिक

महत्त्वपूर्ण है।

दलित कला मूलतः जीवनवादी कला है। इस कला के सभी सूत्र जीवन से जुड़े है । 'मेरी कला मेरा जीवन है' मैं मनुष्य के लिए कला करता हूँ। ऐसी दलित कलाकार एवं लेखक की स्पष्ट धारणा हैं । दलित कला का उद्देश्य जागरूकता ही है। इसलिए दलित एवं गैर दलित कलाकार दोनों ही इस विषय को चित्रित करते है। शिल्पकला एवं चित्रकला दोनों ही ललित कलाओं की मुख्य कला होने से दलित एवं गैर दलित कलाकारों ने प्रारम्भ से ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम चित्रकला एवं शिल्पकला को बनाया है।

कला के लिए एक कलाकार का महानतम गुण यह है कि वह अपने परिवेश में रहकर जिन परिस्थितियों का सामना करता है उनकी कला में भी उसी वातावरण की अनुभूति होती है। यही अनुभूति विविध माध्यम एवं तकनीक के साथ कलाकारों ने अपनी कला में दिखाया है।

ललित कला की विधाओं में तकनीकी परिवर्तन के साथ–साथ विषय में भी परिवर्तन हुआ । अब कला में व्यक्तिगत भावनाओं और संवेदनाओं के विषय को कला का मुख्य विषय बनाकर अपनी कलाकृतियाँ प्रस्तुत की है। दलित चिन्तन की प्रबल इच्छा से कलाकृतियाँ निर्माण करना एवं समाज में जागरूकता लाना, यही एक धर्म कलाकारों ने माना था । इस कारण उन्होंने अपने चित्रों का विषय ऐसा चयन किया जिसे बड़ी दयनीय दृष्टि से देखते है। जैसे मेहनतकश मजदूर, मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग, भिखारी आदि। इस वर्ग को समाज में निचली श्रेणी में रखा गया है पर कलाकारों ने इस वर्ग की भावनाओं को हमेशा अपनी कलाकृतियों में स्थान देकर सम्मान दिया है।

आजादी के पहले एवं बाद में भी बहुजन समाज से जुड़ी समसामयिक अभिव्यक्तियाँ पोस्टर, पम्पलेट, आख्यान चित्रों व मूर्तियों में देखे जाते है। यह पोस्टर, चित्र और मूर्तियाँ अपने स्वरूप, आकार, रंग, अनुपात, शैली और स्थितियों में भिन्न और अटपटी जरूर लग सकती है, लेकिन इन कलाकृतियों में निरन्तरता और सच्चाई शामिल है। पथ प्रदर्शक डॉ॰ अम्बेडकर की मूर्तियाँ एक 'आईकन' की भांति स्वीकृत हो चुकी है। जिसमें लोगों की सहजता और सहमति की झलक मिलती है। तथागत बुद्ध, महावीर, हनुमान, साँईबाबा और येशूमसीहा की भाँति डॉ॰ अम्बेडकर की छवि बहुजन समाज का आत्मबल बढ़ाती है, हौसला देती है। वर्गविहीन समाज की पक्षधरता की लड़ाई का संकल्प उसमें साफ देखा जा सकता है। मानसिक विचारधाराओं के बदलने से कला के विषय भी बदलने लगे है। कला में आये क्रान्तिकारी प्रयोगों से विषयों में भिन्नता आने लगी । कलाकार वातावरण में उपस्थित घटनाओं, क्रियाकलापों से प्रभावित होकर सकारात्मक और नकारात्मक ताने बाने से गुजर कर अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करता है। इस धारा में कई प्रसिद्ध आधुनिक दलित एवं गैरदलित कलाकारों ने दलित समस्याओं पर काम किया। रविन्द्रनाथ, अवनीन्द्रनाथ, अमृता शेरगील, बी॰सी॰ सन्याल, रामकिंकर बैज, सतीश गुजराल, चित्तोंप्रसाद, बी॰ प्रभा, वृंदावन सोलंकी, लक्ष्मण ऐले, अय्याजुद्दीन पटेल, शिवबालन, शरद शर्मा आदि । आधुनिक भारतीय गैरदलित कलाकारों ने इस वर्ग की मर्मस्पर्शी भावनाओं को छुआ। जिनमें समाज के शोषित वंचित और दलित जीवन की छवियाँ है। दलितों की दुर्दशा और गुस्सा, भय और आशा तथा आस्था और विश्वास को प्रस्तुत करने में कामयाब दिखते है। इनके चित्र नागरिक विरोध की भाषा बोलते है और राजनीतिक प्रतिरोध भी दर्ज करते है। अपने समय का सच व इतिहास प्रस्तुत करते है।

अय्याजुद्दीन पटेल ने अपनी कलाशैली के द्वारा पारंपरिक कला तथा समकालीन कला के समामेलन को कलात्मक सौंदर्य के साथ प्रस्तुत किया है। इनकी कलात्मक अभिव्यक्ति की अपनी एक अनोखी शैली है। इन्होंने जीवंत यथार्थवादी और पारंपरिक अभिनव विचारों का समकालीनता के माध्यम से रंगों के वंचित प्रयोग द्वारा तथा साहसिक प्रयासों पर जोर दिया है। समाज में ग्रामीण परिस्थितियों का आंकलन करने के लिए और उनकी समस्याओं का रास्ता निकालने के लिए शरद शर्मा ने कॉमिक कला को अपना माध्यम चूना । 1997 में शरद शर्मा ने एक पत्रकार कॉर्टून तथा दिवार पोस्टर का कार्य प्रारम्भ किया।

शरद शर्मा ने अपनी कला के द्वारा दिवारों पर पोस्टर बनाकर निम्न वर्ग के लोगों का ध्यान आकर्षित किया । राजनैतिक दलों तथा सिनेमा घरों की तरफ भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया। झारखण्ड में इन्होंने पोस्टर के माध्यम से आदिवासी अधिकार पुड़ेल का शिकार, शराब और भ्रष्टाचार

की तरफ ध्यान केन्द्रित किया। मध्यप्रदेश में इन्होंने विस्थापन अशिक्षा, सामाजिक अनुष्ठानों की तरफ ध्यान दिया। दलित विषय पर गैरदलित कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से अभिव्यक्ति की है। गैरदलित एवं दलित दोनों ही संवेदना से जुड़े है कारण प्रत्येक कलाकार भावनात्मक होता है और परिस्थिति को देखकर काम करता है। संवेदना से जुड़े अनेक दलित कलाकार भी अलग–अलग माध्यम से इन विषयों पर काम कर रहे है। एक संवेदनापूर्ण व अनुभवपूर्ण कलाकार ही अपनी भावनाओं को रंगों और रेखाओं के द्वारा कलाकृति निर्माण कर सकते है।

दलित कलाकारों ने अपने जीवन में जो देखा उसे अनुभव किया कि मानवीय भावना को जीवित रूप देना है तो सच को उजागर करना ही होगा। इसलिए कलाकृति द्वारा सच को समाज के सामने लाया गया पर समाज को सच समझाना और बताना शुरू हुआ तो समाज के अभिजात वर्ग ने शोर मचाना शुरू किया। दलित कलाकारों ने अपनी कलाकृति का विषय समाज से ही लिया। वह समाज जिससे दलितों को नाराजगी अस्पृश्यता, जातिभेद, वर्णभेद, गुस्सा, भय, आतंक दिया । यही दलित कलाकार दलित भावना को कलाकृति द्वारा प्रस्तुत करते है। अपनी भावनाओं का विविध विधाओं में व्यक्त करते है। जन्म से दलित होना एवं उसी अनुभव को कला द्वारे व्यक्त करना एक आक्रमक योगदान है। इस विषय में अनेक दलित कलाकार काम कर रहे है। गोपाल नायडु, बसराज जाने, बळी खैरे, जॉन देवराज, सवी सावरकर, केतन पिपळापुरे, लिंगराज गोणे, अर्चना सोन्ती, मलप्पा ढोले आदि ।

बसराज जाने कर्नाटक के दलित कलाकार के रूप अपनी कला में अपने आप को तलाशते नजर आते है। आज भी अपनी जिंदगी के कुछ पलों को ढूंढ रहे है। उनके काम करने का तरीका एवं उनके चित्र का रूप ऐसा ही कहता है। एक दलित को समाज में जगह बनाना कितना मुश्किल है। उनकी शैली भी कुछ विचारों का मंथन कर रही है। इस मंथन में वह हमेशा ही चोकोर प्रारूप चित्र ही चित्रित करते है। चित्रों में पारम्परिक वातावरण निर्माण करने की कोशिश दिखती है। चमकीले रंग एवं एक रंगसंगती का प्रयोग दिखता है । जिस तरह कलाकार पर वातावरण का अनुभव होता है उसी तरह रंगसंगति चित्र बदलती नजर आती है।

बळी खैरे ने किसी भी चित्रकला महाविद्यालय से चित्रकला की शिक्षा ग्रहण नहीं की । अपनी गरीब परिस्थितियों में जन्मे बळी खैरे केवल जिद् के कारण चित्रकला की आराधना कर पाये। हजार पन्द्रह सौ आबादी वाला गाँव, जिसमें बळी खैरे आज प्रसिद्ध चित्रकार माने जाते है। बळी खैरे की परिस्थिति ऐसी थी कि वो रंग ब्रश भी नहीं खरीद पाते थे । ऐसे समय में वो जिद्द के साथ खड़े हुए। उन्होंने कोयला, पेन्सिल इस माध्यम का प्रयोग करके चित्र बनाये थे। दैनंदिन जीवन के वास्तव में ही उनके चित्र विषय छिपे हुए है। चित्रकला की कोई भी शिक्षा प्राप्त न करने वाले चौथी कक्षा से ही कला उपासक हो गये और जगभर में लगभग 30 देशों में अपने चित्रों से प्रसिद्ध हुए। कथा, कविता, नाटय स्मरणिका आदि के एक हजार से भी ज्यादा मुख पृष्ठ उन्होंने बनाए। बळी खैरे ने बाबा साहेब को अपनी कला का आधार स्वरूप स्वीकार किया। दलितों के मानव अधिकार का चित्रण उन्होंने अपनी कला में किया तथा भारत में जी रहे दलित लोगों को अपने अधिकार दिलाने स्वरूप संदेश दिया। बळी खैरे खुद दलित होने की वजह से समाज से जुड़ी समस्याओं से भली भांति परिचित थे । वे असहाय दलितों की पीड़ा को समझते है।

चित्रकला एवं छापाकला चित्रण पद्धति को साथ–साथ लेकर चलने वाले कलाकार लिंगराज गोने का कलाक्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। जो वर्तमान समय में भी अपनी पूर्ण निष्ठा व लगन के साथ अपनी अभिव्यक्तियों को कला के रूप दे रहे हैं। जिन्होंने कला में शिक्षण लिया और कला शिक्षण दे रहे है। उनका मानना है कि मेरा कला शिक्षण महज एक मार्गदर्शन के रूप में है ताकि मेरे द्वारा प्रशिक्षित विद्यार्थी या कलाकार अपनी प्रतिभा को निखार सके तथा कला के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दे सके ।

उन्होंने तेलंगाना मुद्दे, प्रवास की समस्या, जलसंकट इस विषय पर कलाकृति बनायी है। एक्रेलिक कलर के साथ ग्रामीण जीवन के रंग जैसे कोयला भी उनके कलायात्रा का हिस्सा रहा है। उनके वर्तमान काल के चित्रों में कमल और चट्टानों जैसे तत्व बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह बताते है, गन्दे पाणी के ऊपर कमल के फूल हर किसी को आकर्षित करते है। इसी प्रकार हम कई महान नेताओं को और उनके व्यक्तित्व को देखते है। जिनकी पृष्ठभूमि इतनी प्रभावशाली नहीं होती लेकिन फिर भी एक शीर्ष मुकाम हासिल कर लेते है।

लिंगराज में ऐसा जुनून है, जो युवा कला छात्रों का मार्गदर्शन करता है। वे उनको ड्राईंग, पेन्टिग, ऐनिमेशन और संस्कृति के बारे में सिखाते है। पिछले दस वर्षो से लिंगराज यह कार्य कर रहे है। लिंगराज कहते है, मैं नहीं चाहता, कि ये छात्र या कलाकार भी यही सब कुछ सहे जो हमने सहन किया है। इसी उद्देश्य से वो कलाकारों की शिक्षण देते है कि मेरी छोटी–सी मदद के साथ वे शैक्षणिक संस्थानों की परीक्षा पास कर एक सकारात्मक नोट पर अपनी यात्रा शुरू करे । यह किसी भी महत्वाकांक्षी कलाकार के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

दलित कला सम्बन्धी विचार व आंदोलन अब हर क्षेत्र में हो रहा है। दलित कलाकार एवं गैरदलित कलाकार दोनों ही अपनी कलाकृतियों में आंतक प्रस्तुत करते है। कलाकार कला के आंदोलन में अपना योगदान दे रहे है। वर्तमान में दलित विषयों को गम्भीरता से लिया जा रहा है और भविष्य में लिया जायेगा तथा समाज के हर क्षेत्र में दलित कला को स्थापित करने का प्रयत्न चल रहा है। (कलाकार का दलित समाज के लिए लड़ना एक सामाजिक अधिकार है।)**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. अम्बेडकर, बी॰ आर॰, हिन्दूत्वाचे कोडे (मराठी अनुवादी), सुगत प्रकाशन नागपूर, सन् 2008
2. अग्रवाल, गिरजि किशोर, भारतीय मूर्तिकला परिचय, ललित कला प्रकाशन अलीगढ़
3. भारद्वाज, विनोद, वृद्ध आधुनिक कला कोष वाजी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
4. बेचैन, श्यौराज सिंह, दलित दखल, वसुंधरा गजियाबाद, सन् 2001
5. जोशी, ज्योतिश, भारतीय कला चिंतन–कला पद्धथ्त, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, 2010, प्रथम संस्करण
6. कुमार, सुनील, भारतीय छापाचित्र कला, (आदि से आधुनिक कला तक), भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2000, प्रथम संस्करण
7. माइकल, एस॰ एम॰, आधुनिक भारत में दलित, रावत प्रकाशन, जयपूर, 1999, प्रथम संस्करण
8. रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपूर, 2004, प्रथम संस्करण
9. सूर्या, अनिल, आंबेडकरी स्वकथने : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, सुगावा प्रकाशन, पुणे, 1996, प्रथम संस्करण
10. शकुल, रामचंद्र, आधुनिक कला–समीक्षावाद, कला प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004, प्रथम संस्करण
11. जोशी, ज्योतिष, समकालीन कला, कला और कविता पर एकाग्र, ललित कला अकादमी की पत्रिका, अंक 15–16
12. च्ंजमसए ।ल्रंनककपदण त्मसमेंपदह ैमतपमे व िछमू च्ंपदजपदहण थ्मइण 2017ण ब्ंजंसवहण त्ंअपदकतं ठींूंदण च्ंपदजपदह म्गीपइपजपवदण छमू क्मयीपण
13. ळवदमए स्पदहतंरंण ज्तपवक ें म्गीपइपजपवदण डंतबी 2007ण ब्ंजंसवहण सींदं ।तज ळंससमतलण भ्लकमतंइंकण ।ण्च्
14. ळसवदमए स्पदहतंरंएण व्नत श्रवनतदमलण म्गीपइपजपवदण ।चतपस 2011ण बंजंसवहण झंतदंजां बिपजतवसबंसं च्तंपीकीण ठंदहंसवतमण
15. ळवदमए स्पदहतंरंण ।तज इमंजण म्गीपइपजपवदए ।चतपस 2011ण ब्ंजंसवह क्पअपेपवद व िठपतसं ।तबींमवसवहपबंस 2 ब्नसजनतंस त्मेमंतबी प्देजपजनजम भ्लकमतंइंकण
16. ळवदमए स्पदहतंरंण ज्मसंदहंदं त्लजंदहमत ैलनकन च्वतजं बिपजतंसलण 2014ण ब्ंजंसवहण झ्ञतए त्ंअपदकतं ठींतंजीपण भ्लकमतंइंकण
17. पटेल, आयाजुदीन, एकल प्रदर्शनि, प्रदर्शनि 2008 कैटलॉग आर्ट गैलरी, मुंबई
18. पटेल, आयाजुदीन, समुह प्रदर्शनि, प्रदर्शनि 2013 कैटलॉग आर्ट गैलरी, न्यूयार्क
19. पटेल, आयाजुदीन, प्रदर्शनि 2014 कैटलॉग आर्ट गैलरी कर्नाटक
20. जाने, बसराज एल, एकल प्रदर्शनी, 1976 कैटलॉग फाईन आर्ट संस्थान गुलबर्गा
21. जाने, बसराज एल॰, चित्रकला प्रदर्शनी, 2005 कैटलॉग आइडियल फाईन आर्ट सोसायटी, गुलबर्गा
22. जाने, बसराज एल प्रदर्शनी 2013 कैटलॉग रवि वर्मा आर्ट गैलरी, पुणे
23. जाने, बसराज एल॰ प्रदर्शनी, 2002, कैटलॉग ईमाया स्की कर्नाटका चित्रकला परिबत, बैगलोर
24. खैरे, बली, लोकमत, मुम्बई 4 जुलाई, 2001, मुद्रांकन
25. खैरे, बली, तरुण भारत, नागपूर 14 अप्रैल, 2009, मुद्रांकन
26. खैरे, बली, तभा वृत्तसेवा, यवतमाल 18 जून 2010, मुद्रांकन